بسم الله الرحمن الرحيم

कुरआन को समझना शुरू कीजिये
शॉर्ट कोर्स

कुरआनी सूरतें

أَعُوذُ	بِاللهِ	مِنَ الشَّيْطَانِ	الرَّجِيمِ ۞
जो मरदूद है।	शैतान से	अल्लाह की	मै पनाह मे आता हूँ

سُورَةُ الفَاتِحَة: بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ	اللهِ	الرَّحْمٰنِ	الرَّحِيمِ (1)
रहेम करने वाला है।	जो बहुत मेहेरवान	अल्लाह के	नाम से

اَلْحَمْدُ	لِلّٰهِ	رَبِّ	الْعَالَمِينَ (2)
तमाम जहानो का।	(जो) रब है	अल्लाह के लिये है	तमाम तारीफ़े और शुक्र

الرَّحْمٰنِ	الرَّحِيمِ (3)	مَالِكِ	يَوْمِ	الدِّينِ (4)
बदले के।	दिन का	मालिक है	रहेम करने वाला है।	बहुत मेहेरबान

إِيَّاكَ	نَعْبُدُ	وَإِيَّاكَ	نَسْتَعِينُ (5)
हम मदद चाहते हैं।	और सिर्फ़ तुझ ही से	हम इबादत करते हैं	सिर्फ़ तेरी ही

اهْدِنَا	الصِّرَاطَ	الْمُسْتَقِيمَ (6)
सीधे,	रास्ते की	हमें हिदायत दे

صِرَاطَ	الَّذِينَ	أَنْعَمْتَ	عَلَيْهِمْ
रास्ता	उन लोगों का	तू ने इन्आम किया	उन पर,

غَيْرِ	الْمَغْضُوبِ	عَلَيْهِمْ	وَلَا	الضَّالِّينَ (7)
न	उन पर	ग़ज़ब किया गया	और न	जो गुम्राह हुए।

سُورَةُ العَصر: بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

وَالْعَصْرِ (1)	إِنَّ	الْإِنسَانَ	لَفِي خُسْرٍ (2)	إِلَّا
क़सम ज़माने की	बेशक	इन्सान	ख़सारे में (है),	सिवाए

الَّذِينَ	آمَنُوا	وَعَمِلُوا	الصَّالِحَاتِ
(उन के) जो	ईमान लाए	और उन्हों ने अमल किये	नेक

وَتَوَاصَوْا	بِالْحَقِّ	وَتَوَاصَوْا	بِالصَّبْرِ (3)
और एक दूसरे को वसीय्यत की	हक़ की	और एक दूसरे को वसीय्यत की	सब्र की।

سُورَةُ الكَافِرُون: بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

قُلْ	يَا أَيُّهَا	الْكَافِرُونَ (1)	لَا	أَعْبُدُ	مَا	تَعْبُدُونَ (2)
कह दीजिए	ऐ	इन्कार करने वालो!	नहीं मैं इबादत करता	जिस की	तुम इबादत करते हो,

وَلَا	أَنتُمْ	عَابِدُونَ	مَا	أَعْبُدُ (3)
और न तुम	इबादत करने वाले हो	जिस की	मैं इबादत करता हूँ ,

وَلَا	أَنَا	عَابِدٌ	مَّا	عَبَدتُّمْ (4)
और न मैं	इबादत करने वाला	जिस की	तुम ने इबादत की,

وَلَا	أَنتُمْ	عَابِدُونَ	مَآ	أَعْبُدُ (5)
और न तुम	इबादत करने वाले	जिस की	मैं इबादत करता हूँ ,

لَكُمْ	دِينُكُمْ	وَلِيَ	دِينِ (6)
तुम्हारे लिए	तुम्हारा दीन	और मेरे लिए	मेरा दीन।

سُورَةُ النَّصْر : بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

إِذَا	جَاءَ	نَصْرُ اللهِ	وَالْفَتْحُ (1)
जब	आजाए	अल्लाह की मदद	और फ़तह (हो जाए),

وَرَأَيْتَ	النَّاسَ	يَدْخُلُونَ	فِي دِينِ اللهِ	أَفْوَاجًا (2)
और आप (स.) देखें	लोग	दाख़िल हो रहे हैं	अल्लाह के दीन में	फ़ौज दर फ़ौज,

فَسَبِّحْ	بِحَمْدِ	رَبِّكَ
पस पाकी बयान करें	तारीफ़ के साथ	अपने रब की,

وَاسْتَغْفِرْهُ	إِنَّهُ	كَانَ تَوَّابًا (3)
और उस से बख़्शिश तलब करें।	बेशक वह	बड़ा तौबा क़बूल करने वाला है।

سورة الإخلاص: بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

قُلْ	هُوَ	اللهُ	أَحَدٌ (1)	اللهُ
कह दीजिए	वह	अल्लाह	एक है।	अल्लाह

الصَّمَدُ (2)	لَمْ يَلِدْ	وَلَمْ	يُولَدْ (3)
बेनियाज़ है।	न उस ने (किसी को) जना	और न	वह जना गया।

وَلَمْ يَكُن	لَّهُ	كُفُوًا	أَحَدٌ (4)
और नहीं है	उस का	हमसर	कोई।

سورة الفلق: بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

قُلْ	أَعُوذُ	بِرَبِّ	الْفَلَقِ (1)
कह दीजिए	मैं पनाह में आता हूँ	रब की	सुबह के,

مِن شَرِّ	مَا	خَلَقَ (2)
शर से	(उस के) जो	उस ने पैदा किया,

وَمِن شَرِّ	غَاسِقٍ	إِذَا	وَقَبَ (3)
और शर से	अन्धेरे के	जब	(वह) छा जाए,

وَمِن شَرِّ	النَّفَّاثَاتِ	فِي الْعُقَدِ (4)
और शर से	फूंके मारने वालियों के	गिरहों में,

وَمِن شَرِّ	حَاسِدٍ	إِذَا	حَسَدَ (5)
और शर से	हसद करने वाले के	जब	वह हसद करे।

سورة الناس: بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

قُلْ	أَعُوذُ	بِرَبِّ	النَّاسِ (1)
कह दीजिए	मैं पनाह में आता हूँ	रब की	लोगों के,

مَلِكِ النَّاسِ (2)	إِلَٰهِ النَّاسِ (3)
लोगों के बादशाह की,	लोगों के माबूद की,

مِن شَرِّ	الْوَسْوَاسِ	الْخَنَّاسِ (4)
शर से	वस्वसा डालने वाले	छुप कर हमला करने वाले के,

الَّذِي	يُوَسْوِسُ	فِي صُدُورِ	النَّاسِ (5)
जो	वस्वसा डालता है	सीनों (दिलों) में	लोगों के

مِنَ الْجِنَّةِ	وَالنَّاسِ (6)
जिन्नों में से	और इन्सानों (में से)।

नमाज़ के अज़कार

वज़ू से पहले की दुआ

بِسْمِ	اللهِ
नाम से	अल्लाह के।

वज़ू के बाद की दुआ

أَشْهَدُ	أَنْ	لَا	إِلٰهَ	إِلَّا	اللهُ
मैं गवाही देता हूँ	कि	नहीं है	कोई माबूद	सिवाए	अल्लाह के,

وَحْدَهُ	لَا شَرِيكَ	لَهُ
वह अकेला है,	नहीं कोई शरीक	उस का,

وَأَشْهَدُ	أَنَّ	مُحَمَّدًا	عَبْدُهُ	وَرَسُولُهُ
और मैं गवाही देता हूँ	कि	मुहम्मद (स.)	उस के बन्दे	और उसके रसूल हैं।

اَللّٰهُمَّ	اجْعَلْنِي	مِنَ التَّوَّابِينَ
ऐ अल्लाह!	बना दे मुझे	खूब तौबा करने वालों (में) से

وَاجْعَلْنِي	مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ
और बना दे मुझे	पाक साफ़ रहने वालों (में) से

***** इक़ामत *****

اَللهُ أَكْبَرُ اَللهُ أَكْبَرُ ۞	أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ ۞
अल्लाह सब से बड़ा है। अल्लाह सब से बड़ा है	मैं गवाही देता हूं कि कोई माबूद नहीं है सिवाए अल्लाह के।

أَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُولُ اللهِ ۞	حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ ۞
मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद (सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।	आओ तरफ़	नमाज़ की।

حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ ۞	قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ ۞	قَدْ قَامَتِ الصَّلٰوةُ ۞
आओ तरफ़	कामयाबी की।	तहक़ीक़ (यक़ीनन)	खड़ी हो गई नमाज़।	तहक़ीक़ (यक़ीनन)	खड़ी हो गई नमाज़

اَللهُ أَكْبَرُ اَللهُ أَكْبَرُ ۞	لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ
अल्लाह सब से बड़ा है। अल्लाह सब से बड़ा है।	नहीं है कोई माबूद सिवाए अल्लाह के

***** सना *****

سُبْحَانَكَ	اللّٰهُمَّ	وَبِحَمْدِكَ	وَتَبَارَكَ	اسْمُكَ
पाक है तू	ऐ अल्लाह,	और तारीफ़ है तेरे लिए,	और बरकत वाला है	तेरा नाम,

وَتَعَالٰى جَدُّكَ	وَلَا إِلٰهَ	غَيْرُكَ
और बुलंद व बाला है तेरी बुज़ुर्गी,	और नहीं कोई माबूद	सिवाए तेरे।

***** रुकू के अज़कार *****

سُبْحَانَ	رَبِّيَ	الْعَظِيمِ ۞	سَمِعَ اللهُ	لِمَنْ
पाक है	मेरा रब	अज़मत वाला।	सुन ली अल्लाह ने	उसकी जिसने

حَمِدَهُ ۞	رَبَّنَا	وَلَكَ	الْحَمْدُ
तारीफ़ की उसकी।	ऐ हमारे रब,	तेरे ही लिए	हर तरह की तारिफ़ है।

***** सजदा के अज़कार *****

سُبْحَانَ	رَبِّيَ	الْأَعْلٰى ۞
पाक है	मेरा रब	सबसे बुलंद।

***** तशहहुद *****

اَلتَّحِيَّاتُ	لِلّٰهِ	وَالصَّلَوَاتُ	وَالطَّيِّبَاتُ
सभी क़ौली इबादतें	अल्लाह ही के लिए हैं,	और सभी बदनी इबादतें	और सभी माली इबादतें (भी),

اَلسَّلَامُ	عَلَيْكَ	أَيُّهَا النَّبِيُّ	وَرَحْمَةُ اللهِ	وَبَرَكَاتُهُ
सलाम हो	आप पर	ऐ नबी	और अल्लाह की रहमत	और बरकतें हों उसकी,

اَلسَّلَامُ	عَلَيْنَا	وَعَلٰى	عِبَادِ اللهِ الصَّالِحِينَ
सलाम हो	हम पर	और ऊपर	अल्लाह के नेक बंदों (के)।

أَشْهَدُ أَنْ	لَا إِلٰهَ	إِلَّا اللهُ
मैं गवाही देता हूँ कि	नहीं कोई माबूद	सिवाए अल्लाह के ,

وَأَشْهَدُ أَنَّ	مُحَمَّدًا	عَبْدُهُ	وَرَسُولُهُ
और मैं गवाही देता हूँ कि	मुहम्मद (स.)	उसके बंदे	और उसके रसूल (हैं)।

***** दरूद *****

اَللّٰهُمَّ	صَلِّ	عَلٰى مُحَمَّدٍ	وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ
ऐ अल्लाह	दरूद (रहमत) भेज	मुहम्मद (स.) पर	और आल पर	मुहम्मद (स.) की,

كَمَا صَلَّيْتَ	عَلٰى إِبْرَاهِيمَ	وَعَلٰى اٰلِ إِبْرَاهِيمَ
जैसे भेजी रहमत तू ने	इब्राहीम पर	और आल पर	इब्राहीम की,

إِنَّكَ	حَمِيدٌ	مَّجِيدٌ
बेशक तू	तारीफ़ के क़ाबिल	बुज़ुर्गी वाला है।

اَللّٰهُمَّ	بَارِكْ	عَلٰى مُحَمَّدٍ	وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ
ऐ अल्लाह	बरकत अता फ़रमा	मुहम्मद (स.) पर	और आल पर	मुहम्मद (स.) की,

كَمَا	بَارَكْتَ	عَلٰى إِبْرَاهِيمَ	وَعَلٰى اٰلِ إِبْرَاهِيمَ
जैसे	तू ने बरकत अता की	इब्राहीम (पर	और आल पर	इब्राहीम की,

إِنَّكَ	حَمِيدٌ	مَّجِيدٌ
बेशक तू	तारीफ़ के क़ाबिल	बुज़ुर्गी वाला है।

***** दरूद के बाद की एक दुआ *****

اَللّٰهُمَّ	إِنِّي	ظَلَمْتُ	نَفْسِي	ظُلْمًا كَثِيرًا
ऐ अल्लाह	बेशक मैं	मैं ने ज़ुल्म किया	अपनी जान पर,	ज़ुल्म बहुत ज़्यादा,

وَلَا	يَغْفِرُ	الذُّنُوبَ	إِلَّا أَنْتَ	فَاغْفِرْ لِي
और नहीं	बख़्श सक्ता	गुनाहों को	सिवाए तेरे (कोई),	बस बख़्श दे मुझ को

مَغْفِرَةً مِّنْ عِنْدِكَ	وَارْحَمْنِي
अपनी ख़ास बख़्शिश से,	और मुझ पर रहेम फ़रमा,

إِنَّكَ أَنْتَ	الْغَفُورُ	الرَّحِيمُ
बेशक तू ही	बख़्शने वाला	बेहद रहम वाला है।

दुआएँ वग़ैरा

***** सोने के वक़्त की दुआ *****

اَللّٰهُمَّ	بِاسْمِكَ	أَمُوتُ	وَأَحْيَا
ऐ अल्लाह	तेरे नाम से	मैं मरता हूँ	और मैं जीता हूं।

***** नींद से जागने पर *****

اَلْحَمْدُ	لِلّٰهِ	الَّذِي	أَحْيَانَا
तारीफ़ और शुक्र	अल्लाह के लिए है	जिसने	ज़िंदा किया हमको

بَعْدَ مَا	أَمَاتَنَا	وَإِلَيْهِ	النُّشُورُ
बाद	मौत देने के हमको,	और उसी की तरफ़	उठ कर जाना है।

***** खाना शुरू करते वक़्त *****

بِسْمِ اللهِ	या अगर शुरू में कहना भूल जाए तो कहे	بِسْمِ اللهِ فِي أَوَّلِهِ وَآخِرِهِ	
		अल्लाह के नाम से	इसके शुरू में	और इसके आख़िर में।

***** खाना खाने के बाद *****

اَلْحَمْدُ	لِلّٰهِ	الَّذِي	أَطْعَمَنَا	وَسَقَانَا
तारीफ़ व शुक्र	अल्लाह के लिए है	जिस ने	खिलाया हमें,	और पिलाया हमें,

وَجَعَلَنَا	مِنَ الْمُسْلِمِينَ
और बनाया हमें	इस्लाम लाने वालों (में) से।

***** क़ुरआनी दुआएँ *****

رَبِّ	زِدْنِي	عِلْمًا (20:114)
ऐ मेरे रब	ज़्यादा कर मुझे	इल्म में।

رَبَّنَا	آتِنَا	فِي الدُّنْيَا	حَسَنَةً	وَفِي الْآخِرَةِ
ऐ हमारे रब!	हमें दे	दुनिया में	भलाई,	और आख़िरत में

حَسَنَةً	وَقِنَا	عَذَابَ	النَّارِ (2:201)
भलाई,	और हमें बचा	अज़ाब से	आग (दोज़ख़) के।

***** विभिन्न आयतें वग़ैरा *****

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ	إِلَّا	رَحْمَةً	لِّلْعَالَمِينَ .
और नहीं हम ने भेजा आपको	मगर	रहमत बना कर	जहानों के लिये।

اللهُ الَّذِي	خَلَقَكُمْ	ثُمَّ رَزَقَكُمْ
अल्लाह है जिसने	पैदा किया तुमको	फिर रिज़्क़ दिया तुम को

ثُمَّ يُمِيتُكُمْ	ثُمَّ يُحْيِيكُمْ .
फिर मौत देगा तुमको	फिर ज़िन्दगी देगा तुमको।

إِنَّ اللهَ	مَعَ	الصَّابِرِينَ.
बेशक	अल्लाह	साथ (है)	सब्र करने वालों के।

إِنَّا لِلّٰهِ	وَإِنَّا	إِلَيْهِ	رَاجِعُونَ.
बेशक हम अल्लाह के लिए हैं	और बेशक हम	उसी की तरफ़	लौट कर जाने वाले हैं।

وَاللهُ	عَلِيمٌ	حَكِيمٌ .
और अल्लाह	जान्ने वाला	हिक्मत वाला है।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ	مَا فِي السَّمَاوَاتِ	وَمَا فِي الْأَرْضِ .
तस्बीह करता है अल्लाह के लिये	जो (कुछ)	आसमानों में	और जो (कुछ)	ज़मीन में है।

يَقَوْمِ	اعْبُدُوا اللهَ	مَا لَكُمْ	مِّن إِلٰهٍ	غَيْرُهُ .
ऐ मेरी क़ौम	इबादत करो अल्लाह की	नहीं है	तुमहारे लिये	कोई माबूद	सिवा उसके।

وَجَاهِدُوا	بِأَمْوَالِكُمْ	وَأَنفُسِكُمْ	فِي سَبِيلِ اللهِ .
और जिहाद करो	तुम्हारे मालों से	और तुम्हारी जानों से	अल्लाह के रास्ते में।

أَيُّكُمْ	أَحْسَنُ	عَمَلاً .		
बेहतर (होगा)	अमल में।	.	.	.

هٰذَا	مِنْ فَضْلِ	رَبِّي .	
यह	फ़ज़्ल से (है)	मेरे रब के।	.	.

إِنَّمَا الْأَعْمَالُ	بِالنِّيَّاتِ.	لَوْ	تُفْتَحُ	عَمَلُ الشَّيْطَانِ
आमाल तो बस	निय्यतों पर हैं।	अगर (की बात)	खोलती है	शैतान के अमल (का दरवाज़ा)।

الصَّلَاةُ	خَيْرٌ	مِّنَ النَّوْمِ	السَّلَامُ عَلَيْكُمْ	رَضِيَ اللهُ عَنْهُ
नमाज़	बेहतर है	नीन्द से।	सलामती हो आप पर।	राज़ी हो अल्लाह उन से।

مَن رَّبُّكَ	مَا دِينُكَ؟	كَيْفَ الْحَالُ؟		إِنْ	شَاءَ اللهُ
कौन है तेरा रब?	क्या है तेरा दीन?	क्या हाल है?	.	अगर	अल्लाह चाहे।

كَمْ	فُلُوس	عِندَكَ؟	كَمْ هٰذَا؟	مَلَكُ الْمَوْتِ
कितने	पैसे है	आप के पास?	कितने में है यह?	फ़रिश्ता मौत का।

كِتَابٌ	أَنزَلْنَاهُ	إِلَيْكَ	مُبَارَكٌ
(यह) किताब	हम ने उतारा है उसको	आप की तरफ़	बरकत वाली है

لِّيَدَّبَّرُوا	آيَاتِهِ	وَلِيَتَذَكَّرَ	أُولُوا الْأَلْبَابِ (ص: 29)
ता कि वे ग़ौर करें	उस की आयात पर	ता कि नसीहत पकड़ें	अक़्ल वाले।

وَلَقَدْ	يَسَّرْنَا	الْقُرْآنَ	لِلذِّكْرِ .
और अलबत्ता तहक़ीक	हम ने आसान किया	क़ुरआन को	समझने और याद करने के लिये,

فَهَلْ	مِن مُّدَّكِرٍ (क़मर: 17، 22، 32، 40)
तो है कोई	नसीहत हासिल करने वाला।

الَّذِي	عَلَّمَ	بِالْقَلَمِ	(العلق: 4)
(अल्लाह) जिस ने	सिखाया	क़लम से	

خَيْرُكُمْ	مَّنْ	تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ	وَعَلَّمَهُ (بخاری)
तुम में से बेहतरीन	(वह है) जो	क़ुरआन को सीखे	और सिखाए उस को।

***** Important Pronouns *****

هُوَ: वह، هُمْ: सब वह، أَنْتَ: आप، أَنْتُمْ: आप सब، أَنَا: मैं، نَحْنُ: हम، هِيَ: वह

هٰذَا: यह، هٰؤُلَاءِ: यस सब، ذٰلِكَ: वह، أُولٰئِكَ: वह सब، الَّذِي: जो वह، الَّذِينَ: जो वह सब

فَعَلَ، فَعَلُوا، فَعَلَتْ، فَعَلْتُمْ، فَعَلْتُ، فَعَلْنَا يَفْعَلُ، يَفْعَلُونَ، تَفْعَلُ، تَفْعَلُونَ، أَفْعَلُ، نَفْعَلُ

افْعَلْ، افْعَلُوا لَا تَفْعَلْ لَا تَفْعَلُوا :: فَاعِل، مَفْعُول، فِعْل :: (فَعَلَتْ ، उसने किया ، تَفْعَلُ है वह करती)

www.understandquran.com
Understand Qur'an Academy
Hyderabad - India, +0091-40-2441-1637